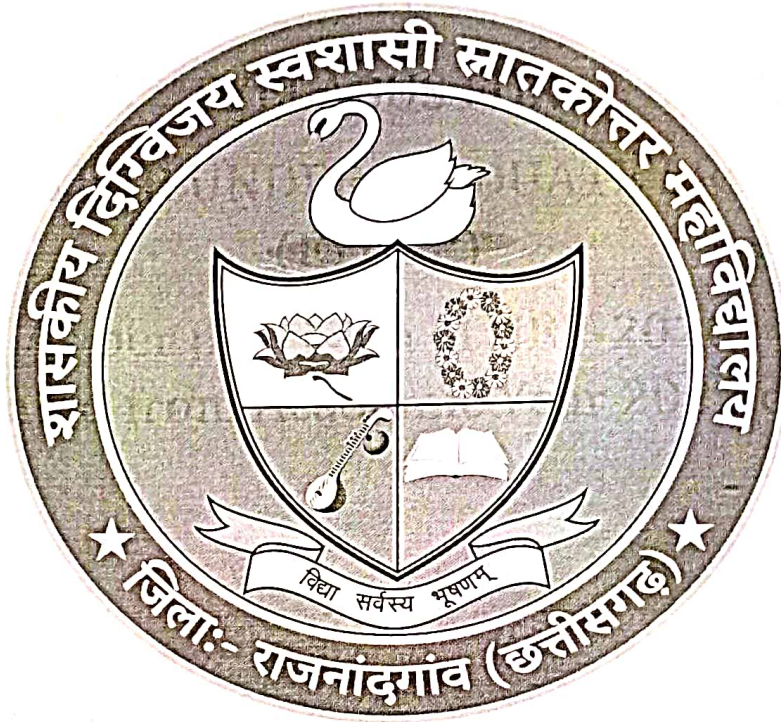


SYLLABUS FOR
THE FOUR-YEAR UNDERGRADUATE PROGRAMME
(FYUGP)

As per provision of NEP-2020
Implemented from Academic Year 2022 onwards



DEPARTMENT
OF
SANSKRIT
GOVT. DIGVIJAY AUTONOMOUS P.G. COLLEGE,
RAJNANDGAON (C.G.)

**SYLLABUS OF 4 YEARS UG PROGRAM (FYUGP) IN SANSKRIT,
AS PER NEP 2020 (SEMESTER- III AND IV)**

(GOVT. DIGVIJAY AUTONOMOUS P G COLLEGE, RAJNANDGAON)

B.A. (Multiple Major) - DEGREE COURSE

(Session 2024-25)

Major 1- SANSKRIT

SECOND YEAR	SEMESTER	COURSE TYPE	COURSE CODE	PAPER TITLE	CREDIT	Max marks	ESE	IA
	III		DSC		नाटक एवं कथा साहित्य	4	100	80
		DSE		गीता एवं उपनिषद्	4	100	80	20
		SEC		भारतीय रंगमञ्च-1	2	50	40	10
IV		DSC		काव्यशास्त्र	4	100	80	20
		DSE		भारतीय दर्शन	4	100	80	20
		SEC		भारतीय रंगमञ्च-2	2	50	40	10

ESE- End Semester Exam, IA-Internal Assessment

Instruction for Question paper setting

End Semester Exam (ESE) for DSC and DSE

There will be 03 sections of question of 80marks

Section A- section A will be very short answer type questions consisting 8 questions of 2 marks, two question from each unit.

Section B- section B will be short answer type questions consisting 4 questions of 6 marks each, one question from each unit with internal choice.

Section C- section B will be long answer (Discriptive) type questions consisting 4 questions of 10 marks each, one question from each unit with internal choice.

End Semester Exam (ESE) for SEC

There will be 8 questions of 8 marks each, out of which any 5 question to be answer.Total marks will be 40.

Minimum Pass Marks 40%

Section	Maximum Marks (80)		Maximum Marks (40)	
A	2 x 8 = 16	Very short answer type questions consisting 8 questions of 2 marks, two question from each unit.	8 x 5 = 40	8 questions of 8 mark each, out of which any 5 question to be answer.
B	6 x 4 = 24	Short answer type questions consisting 4 questions of 6 marks each, one question from each unit with internal choice.		
C	10 x 4 = 40	long answer (Discriptive) type questions consisting 4 questions of 10 marks each, one question from each unit with internal choice		

Department: -SANSKRIT

Session: 2024-25	Program: B.A.
Semester: IV	Subject: SANSKRIT

Programme Specific Outcome:

1. संस्कृत पद्य लेखन के गुणों का प्रारम्भिक वीजारोपण होगा।
2. संस्कृत काव्यशास्त्र के प्रति विद्यार्थियों की समझ विकसित होगी।
3. संस्कृत पद्य लेखन एवं काव्यशास्त्रीय शोध के क्षेत्र में विद्यार्थियों की प्रारम्भिक समझ विकसित होगी।
4. भारतीय दार्शनिक अवधारणाओं से परिचय प्राप्त होगा।
5. विभिन्न दर्शनों के प्रमुख तत्वों एवं सिद्धांतों से परिचित होंगे।
6. भारतीय दर्शन के क्षेत्र में शोध की संभावनाओं की समझ विकसित होगी।
7. नाट्य विधा में दक्ष एवं निपुणता प्राप्त होगी।।
8. नाट्य कौशल का विकास विद्यार्थियों के आत्मविश्वास में वृद्धि करेगा।
9. अभिनय कला एवं रंगमञ्च के क्षेत्र में रोजगार के अवसर तलाश सकेंगे।



GOVT. DIGVIJAY AUTONOMOUS P.G. COLLEGE, RAJNANDGAON (C.G.)

FYUGP (CBCS/LOCF Course)

Department: -SANSKRIT

Session: 2024-25	Program: B.A.
Semester: IV	Subject: SANSKRIT
Course Type: DSC	Course Code: ..V.B.B.D.C.I.467.....
Course Title:	काव्यशास्त्र
Credit: 4	Lecture: 60
M.M. 100 = (ESE 80+IA 20)	Minimum Passing Marks: 40%

Title	काव्यशास्त्र
Course Learning Outcome:	<ul style="list-style-type: none">➤ संस्कृत काव्यशास्त्रीय परंपरा का प्रारम्भिक ज्ञान प्राप्त होगा।➤ संस्कृत काव्यशास्त्र के प्रति विद्यार्थियों की समझ विकसित होगी।➤ छंदों के ज्ञान से संस्कृत पद्यों की गेयता की क्षमता का विकास होगा तथा मौलिक काव्य निर्माण की योग्यता विकसित होगी।➤ अलंकारों के ज्ञान से काव्य के सौंदर्य को समझने तथा काव्य निर्माण में अलंकारों के महत्व को समझने में विद्यार्थी को सहायता मिलेगी।➤ संस्कृत पद्य लेखन एवं काव्यशास्त्रीय शोध के क्षेत्र में प्रारम्भिक समझ विकसित होगी।

[Handwritten signature]

[Handwritten signature]

[Handwritten signature]

[Handwritten signature]

[Handwritten signature]

[Handwritten signature]

Units	Lectures	Lectures (15 x 4 = 60)	Credits
I	15	संस्कृत काव्यशास्त्रीय परम्परा- भामह, दण्डी ,यामन, आनन्दवर्धन, कुल्लुक, क्षेमेन्द्र ,मम्मट, आचार्य विश्वनाथ, पण्डित राज जगन्नाथ	01
II	15	साहित्यदर्पण के अनुसार- काव्य का लक्षण, काव्य प्रयोजन, काव्य हेतु, काव्य भेद	01
III	15	निर्धारित छंदों के लक्षण तथा उदाहरण- अनुष्टुप, इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा, उपजाति, वंशस्थ, आर्या, मालिनी, शिखरिणी, वसन्ततिलका, शार्दूलविक्रीडित, स्त्रगधरा, मन्दाक्रान्ता	01
IV	15	निर्धारित अलंकारों के लक्षण तथा उदाहरण- अनुप्रास, यमक, शब्दश्लेष, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, अनन्वय, अर्थान्तरन्यास, स्वभावोक्ति, अतिशयोक्ति, दीपक, विभावना, विशेषोक्ति, अपनहुति, दृष्टांत (टिप्पणी-अलंकारों के लक्षण चंद्रालोक, काव्यप्रकाश अथवा साहित्यदर्पण से अध्येतव्य हैं। उदाहरण पाठ्यक्रमों से भी दिये जा सकते हैं।)	01

अनुशंसितग्रन्थ -

1. छंदोंमंजरी- डॉ. ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, प्रकाशक- चौखम्बा सुरभारती , वाराणसी
2. भारतीय साहित्य शास्त्र-डॉ. बलदेव उपाध्याय, प्रकाशक-नन्दकिशोर एंड सन्स, चौक, वाराणसी
3. साहित्यदर्पण-व्याख्याकार-आचार्य शेषराज रेग्मी, प्रकाशक- चौखम्बा कृष्णदास
अकादमी, वाराणसी
4. साहित्यदर्पण-व्याख्याकार-आचार्य कृष्णमोहन शास्त्री, प्रकाशक- चौखम्बा संस्कृत
संस्थान, वाराणसी
5. काव्यप्रकाश-आचार्य विश्वेश्वर, प्रकाशक -ज्ञानमंडल लिमिटेड, वाराणसी
6. चन्द्रालोक-ललन मिश्र, प्रकाशक-चौखम्बा पब्लिशर्स, दिल्ली

(Handwritten signatures and initials)

पाठ्यक्रम समिति
हरताधार

क्र. नाम

1- डॉ. दिव्या देशपाण्डे




2- डॉ. ललित प्रधान आर्य



3- डॉ. सुमन सिंह बघेल



4- डॉ. सुपमा तिवारी



5- डॉ. हेमंत शर्मा



C. डॉ. कुमोदकर लाडू





GOVT. DIGVIJAY AUTONOMOUS P.G. COLLEGE, RAJNANDGAON
(C.G.)

FYUGP (CBCS/LOCF Course)

Department: -SANSKRIT

Session: 2024-25	Program: B.A.
Semester: IV	Subject: Sanskrit
Course Type: DSE	Course Code: ...UBA.D.E.T.407.....
Course Title:	भारतीय दर्शन
Credit: 4	Lecture: 60
M.M. 100 = (ESE 80+IA 20)	Minimum Passing Marks: 40%

Title	भारतीय दर्शन
Course Learning Outcome:	<ul style="list-style-type: none">➤ भारतीय विभिन्न दार्शनिक प्रणालियों की उत्पत्ति और विकास की अवधारणाओं से परिचित होंगे।➤ विभिन्न दर्शनों के प्रमुख तत्वों एवं सिद्धांतों से परिचित होंगे।➤ दार्शनिक विचारों एवं सिद्धांतों के मध्य तुलना एवं अंतर करने में सक्षम होंगे।➤ व्यक्तिगत आचार्यों के योगदान और ज्ञान परंपरा के विकास को समझेंगे।

[Handwritten signature]

[Handwritten signature]

[Handwritten signature]

[Handwritten signature]

[Handwritten signature]







[Handwritten signature]

Units	Lectures	Lectures (15 x 4 = 60)	Credits
I	15	आस्तिक दर्शन- सांख्य एवं योग दर्शन: परिचय, प्रमुख तत्व, सिद्धांत एवं विशेषताएं	01
II	15	आस्तिक दर्शन- न्याय एवं वैशेषिक दर्शन: परिचय, प्रमुख तत्व, सिद्धांत एवं विशेषताएं	01
III	15	आस्तिक दर्शन- मीमांसा एवं वेदान्त दर्शन: परिचय, प्रमुख तत्व, सिद्धांत एवं विशेषताएं	01
IV	15	नास्तिक दर्शन- चार्वाक, बौद्ध एवं जैन दर्शन: परिचय, प्रमुख तत्व, सिद्धांत एवं विशेषताएं	01

अनुशंसित ग्रंथ:-

1. सर्वदर्शन संग्रह - व्या. उमाशंकर शर्मा ऋषि
2. भारतीय दर्शन - बलदेव उपाध्याय, शारदा मंदिर, वाराणसी, 2001
3. भारतीय दर्शन - पारसनाथ द्विवेदी, आगरा, 1974
4. भारतीय दर्शन: आलोचना एवं अनुशीलन - चन्द्रधर शर्मा, मोतीलाल बना रसीदास, दिल्ली, 2004

पाठ्यक्रम समिति

क्र.	नाम	हस्ताक्षर
1-	डॉ. दिव्या देशपाण्डे	
2-	डॉ. ललित प्रधान आर्य	
3-	डॉ. सुमन सिंह बघेल	
4-	डॉ. सुषमा तिवारी	
5-	डॉ. हेमंत शर्मा	
6-	डॉ. फागेश्वर साहू	



GOVT. DIGVIJAY AUTONOMOUS P.G. COLLEGE, RAJNANDGAON (C.G.)
FYUGP (CBCS/LOCF Course)
Department: -SANSKRIT

Session: 2024-25	Program: B.A.
Semester: IV	Subject: SANSKRIT
Course Type: SEC	Course Code:
Course Title:	भारतीय रंगमञ्च - 2
Credit: 2	Lecture: 30
M.M. 50 = (ESE 40+IA10)	Minimum Passing Marks: 40%

Title	भारतीय रंगमञ्च - 2
Course Learning Outcome:	<ul style="list-style-type: none">➤ प्राचीन भारतीय रंगमञ्च का ज्ञान प्राप्त होगा।➤ नाट्य विधा में दक्ष एवं निपुण होंगे।➤ नाट्य कौशल का विकास विद्यार्थियों के आत्मविश्वास में वृद्धि करेगा।➤ अभिनय कला एवं रंगमञ्च के क्षेत्र में रोजगार के अवसर तलाश सकेंगे।➤ प्राचीन नाट्य साहित्य के अनुशीलन से तत्कालीन समाज, लोकव्यवहार, भाषा आदि का ज्ञान प्राप्त हो सकेगा।

[Handwritten signature]

[Handwritten signature]

[Handwritten signature]

[Handwritten signature]

[Handwritten signature]

Units	Lectures	Lectures (15 x 2 = 30)	Credits
I	08	रंगमञ्च के प्रकार एवं संरचना का सामान्य परिचय	0.5
II	07	नाट्य तत्त्व-(दशरूपक में) अर्थप्रकृतियाँ, कार्यावस्थाएं, अर्थापक्षोपक, नाट्यसंधियाँ, नाट्य वृत्तियाँ (इन सभी का सामान्य परिचय अपेक्षित है।)	0.5
III	08	नायक एवं नायिका के सामान्य भेद (दशरूपक में) (इनका सामान्य परिचय अपेक्षित है।)	0.5
IV	07	स्वप्नवासवदत्तम्-पंचम अङ्क(व्याख्या)	0.5

अनुशंसितग्रन्थ –

1. नाट्यशास्त्र-भरतमुनि, पारसनाथ द्विवेदी, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी
2. संक्षिप्त नाट्यशास्त्र(हिन्दी भाषा अनुवादसहित), राधावल्लभ त्रिपाठी, वाणी प्रकाशन, वाराणसी
3. नाट्यशास्त्र का इतिहास, डॉ. पारसनाथ द्विवेदी, चौखम्बा विद्याभवन वाराणसी
4. दशरूपक, भोलाशंकर व्यास, चौखम्बा विद्याभवन वाराणसी
5. नाटक और रंगमञ्च, सीताराम झा, बिहार संस्कृत प्रकाशन, पटना
6. संस्कृत नाट्य कला, रामलखन शुक्ल, परिमल पब्लिकेशन, नई दिल्ली
7. भरत नाट्यशास्त्र में नाट्यशालाओं के रूप, डॉ. राय गोविन्द चन्द्र, काशी मुद्रणालय, विश्वेश्वर गंज, वाराणसी
8. संस्कृत साहित्य का अभिनव इतिहास, आचारी राधावल्लभ त्रिपाठी, विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी
9. संस्कृत साहित्य का समग्र इतिहास खण्ड 1-4, राधावल्लभ त्रिपाठी, न्यू भारतीय बुक कॉर्पोरेशन, दिल्ली
10. स्वप्नवासवदत्तम्, श्री तारणीश झा, रामनारायनलाल बेनीमाधव प्रकाशन, इलाहबाद
11. स्वप्नवासवदत्तम्, आचार्य जगदीश लाल शास्त्री, मोतीलाल बनारसी दास, वाराणसी

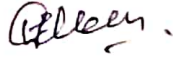
पाठ्यक्रम समिति
हस्ताक्षर

क्र. नाम

1- डॉ. दिव्या देशपाण्डे



2- डॉ. ललित प्रधान आर्य



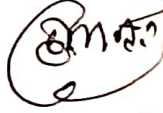
3- डॉ. सुमन सिंह बघेल



4- डॉ. सुषमा तिवारी



5- डॉ. हेमंत शर्मा



6- डॉ. कागेश्वर साहू

